हथेली पर सूरज

कश्मीरीलाल जाकिर

हथेली पर सूरज

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110 002

हथेली पर सूरज

कश्मीरीलाल जाकिर

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002

© भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
पहला संस्करण 1990 : मूल्य : 6.00

मुद्रक :
त्यागी प्रिंटिंग प्रेस
त्रिलोकपुरी
दिल्ली-110091

निवेदन

देश से निरक्षरता-उन्मूलन के लिए राष्ट्रीय साक्षरता मिशन ने काफी बड़े पैमाने पर अपना कार्यक्रम चलाया है और उसमें मिशन को काफी-कुछ सफलताएं भी मिली हैं। दर-असल, मिशन द्वारा संचालित साक्षरता-कार्यक्रम हमें यह भी सोचने के लिए मजबूर करता है कि प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े लोग आत्म-निरीक्षण करें और सही तरीके से काम करने के लिए आगे आयें; महज आलोचना करने से काम नहीं हो पायेगा।

यहीं यह निवेदन करना भी उचित होगा कि साक्षर बन जाने के साथ ही किसी व्यक्ति के लिए साक्षरता के उस ज्ञान को लगातार बनाये रखना भी जरूरी है, उससे अपने आपको जोड़े रखना आवश्यक है। इसके लिए जरूरी है कि प्रौढ़ नवसाक्षरों को उनकी रुचि और आवश्यकताओं के अनुसार अनुवर्ती साहित्य निरन्तर मिलता रहे। इससे प्रौढ़ नवसाक्षरों के भीतर अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाने और एक सही सामाजिक तथा राजनैतिक समझ को पाने और उसे विस्तार देने का उत्साह निस्सन्देह जगेगा।

इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने प्रौढ़ नवसाक्षरों के लिए श्रेष्ठ पुस्तकों के प्रकाशन को हमेशा सक्रिय रूप से महत्व दिया है। 'संघ' ने राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण, आम आदमी के लिए विज्ञान और तकनीकी की क्रियात्मकता, ग्रामीण विकास, परिवार कल्याण, जनसंख्या शिक्षा, सामाजिक कुरीतियों, महिला शिक्षा जैसे विषयों पर नाटक, उपन्यास, कहानी, कविता आदि विधाओं में, अपने पिछले पचास वर्षों के कार्यकाल के दौरान, अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इस पुस्तक का प्रकाशन भी इसी दिशा में कारगर प्रस्तुति है।

प्रसन्नता की बात है कि भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ द्वारा प्रौढ़ नवसाक्षरों के लिए प्रकाशित पुस्तकों की उपयोगिता की सराहना पाठकों द्वारा हमेशा की जाती रही है। हमें विश्वास है, यह पुस्तक भी हमारे नवसाक्षर पाठकों को रुचिकर तथा उपयोगी लगेगी और वे इससे लाभ उठायेंगे।

—जे० सी० सक्सेना
मानद महासचिव

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नयी दिल्ली-110002
2 नवम्बर, 1989

हथेली पर सूरज

पात्र

विजय : नायक (हीरो)
नीली : विजय की पत्नी
सुखू : विजय की मां
राजू : विजय का बेटा
रघू : विजय का मित्र
रमा : रघू की पत्नी
जग्गू : विजय का मित्र
कांशी : विजय का एक अन्य मित्र
शमशेर : रघू का पिता (पंच)
चार अन्य पंच
गांव का चौकीदार
लेडी सोशल वर्कर
मुन्शी
राधे

पहला दृश्य

(समय संध्या से कुछ पहले। एक आम देहाती घर। बाएं कोने में अनाज के दो मटके रखे हैं, उनके ऊपर एक छाज और एक छलनी पड़ी हैं। दाएं कोने में चक्की है परन्तु उसमें आटा नाम को भी नहीं। ऐसा मालूम होता है कि घर में खाने को कुछ नहीं है। चौकी के सामने एक पीढ़ी है। बीच में दीवार के साथ एक पलंग है जिस पर बहुत से मैले कपड़े इधर उधर बिखरे पड़े हैं।

जब पर्दा उठता है तो नीली छाज और छलनी को उठा कर फर्श पर रखती है। फिर ऊपर वाले मटके को उठाकर देखती है। वह खाली है, फिर उसे उठाकर लुढ़का देती है। फिर नीचे वाले मटके में हाथ डाल कर देखती है उसमें मुट्ठी भर चने हैं और कुछ नहीं। चने निकाल कर वह अपने दुपट्टे के पल्लू में डाल लेती है।

नीली के वस्त्र आम गांव की औरतों जैसे ही हैं।

दाहिने विंग से राजू दाखिल होता है। उसने सिर्फ एक कमीज पहन रखी है। बाकी सिर से पैर तक नंगा है। ऐसे लगता है जैसे कि धूल में खेलकर आया है। वह आते ही नीली से लिपट जाता है। नीली उसे अलग करने की कोशिश करती है। राजू फिर लिपटने लगता है।)

नीली : लाख बार कहा है सड़क पर जाकर मत खेला कर। सारा दिन डिपो वालों के ट्रक चलते रहते हैं और महरौली को बसें चलती रहती हैं परन्तु मानता ही नहीं तू। हट जा दूर हो। (राजू को झिड़कते हुए) मैं स्वयं ही चली जाती हूं, बाहर, तंग आ गई हूं इस घर से। (विंग की ओर जाने को मुड़ती है और राजू उसकी ओढ़नी का पल्लू पकड़ लेता है।)

राजू : मुझे भूख लगी है कुछ खाने को दो।

नीली : दादी से लेना जिसने तुम्हें सिर चढ़ा रखा है। (तेजी से जाने के लिए मुड़ती है और राजू के हाथ में पकड़े पल्लू के खिचने से मुट्ठी भर चने जो उसने अपनी झोली में डाले थे, फर्श पर गिर जाते हैं। नीली क्रोध में आकर राजू के एक चांटा मार देती है।)

(राजू रोने लगता है)

नीली : जैसा बाप वैसा बेटा। बाप सारा दिन चौपाल में बैठा आल्हा ऊदल का किस्सा पढ़ता रहता है, तू उसकी चिलमें भरा कर। दूर हो जा।

(नीली रोते हुए राजू को कान से पकड़ कर विंग के भीतर धकेल देती है) निर्भागा सारे चने गिरा गया। सोचा था इन्हें पीस कर रात का गुजारा चलाऊंगी। अब बैठी चुनती रहूं एक-एक दाना और जो ऊपर से सास आ गई तो जिन्दा नहीं छोड़ेगी। (लम्बी आह भरते हुए) मौत भी नहीं आती मुझे।

(विजय राजू को साथ लिये प्रवेश करता है)

विजय : (क्रोध से) मैंने लाख बार कहा तू बात-बात पर राजू को मत पीटा कर, लेकिन तुझ पर कोई असर नहीं। किसी दिन मेरे हाथों से ऐसी पिटेगी कि हड्डी पसली टूट जायेगी।

नीली : आ गये हो वकालत करने। मां बेटा मिलकर इसका जीवन खराब कर रहे हो। रोवेगा अपने भाग को बड़ा होकर।

विजय : वह तो बड़ा होकर रोवेगा तू अभी से रो रही है।

नीली : जिसके पल्ले तुम जैसा निखट्टू बंध जाए वह रोएगी नहीं तो और करेगी क्या ?

विजय : तो और कोई मर्द कर ले जो ढेरों रुपया कमा कर लाता हो। मैं तो निखट्टू हूं, आलसी हूं, बदमास हूं।

नीली : गांव का कोई ऐसा मानस है जो घर पर निकम्मा बैठा है ?

विजय : मेरे हाथ पांव जो टूट रहे हैं (क्रोध से) बुरा लगता हूं। तो घर से चला जाता हूं। फिर घी के दिये जला लेना।

नीली : दूसरों के मर्द जाते नहीं क्या ? तुम यहां रह कर मेरे लिए क्या कर रहे हो जो चले जाओगे तो परलै आ जायेगी। (बाईं ओर से सुखू प्रवेश करती है और फर्श पर बिखरे हुए चनों को देख-कर क्रोध में आ जाती है। नीली अपना घूंघट नीचा कर लेती है।)

सुखू : बहू तुम्हारे घर में सारे गांव से ज्यादा अनाज हैं जो तू यूं लुटाती फिरती है। तुझे तो अपने घर की चिंता ही नहीं। पर तुम्हारा भी क्या दोष। अपना लड़का ही मिट्टी का माधो है, न हूं न हां। ऐसा जोरू का गुलाम तो मैंने देखा ही नहीं।

(नीली शीघ्रता से कमरे के बाहर चली जाती है। कड़क कर)—अब देखा किस तरह मटक कर चली गई है। मैं कुत्तों की तरह भोंकती रहूं उसे परवाह ही नहीं। तुम ही समझाया करो उसे।

विजय : मैं क्या समझाऊं, चैन तो उसे तुम ही नहीं लेने देती, बेमौका छींक भी आ जाए तो उसकी जबान काटने को दौड़ती हो।

सुखू : मैं कसाई जो ठहरी।

विजय : कसाइयों के सिर क्या सींग होते हैं !

सुखू : पर तू उसे कह भी क्या सकता है विजय, तू भी सच्चा है। निकम्मा मर्द तो हर समय डरता रहता है जोरू से।

विजय : तानों से तेरा जी कभी भरेगा भी।

सुखू : पिता की दस बीघे जमीन है जो खाने को मुट्ठी भर अनाज मिल जाता है नहीं तो भीख मांगते फिरो।

विजय : पिता की थी तो मरते समय साथ ले जाता, क्यों छोड़ गया मेरे लिए ?

(सुखू माथा पीट लेती है)

सुखू : ओ निर्लज्ज कुछ तो शर्म किया कर !

विजय : मैं तंग आ गया हूं इस नरक से—ले संभाल अपने पोते को। (राजू को उसकी ओर धकेलता है) अब मैं तुम लोगों का मुंह भी नहीं देखूंगा।

सुखू : मैंने बहुत देखे हैं तुम्हारे जैसे बहादुर, रात को भूख लगी तो पांव पड़ोगे आकर।

विजय : जोरू है सो अलग जान खाती है, मां है सो अलग दुश्मन हो रही है इस जीने से तो मर जाना अच्छा।

(विंग की तरफ बढ़ते हुए) मर गया तो मेरी लाश को हाथ मत लगाना तुम में से कोई।

(विजय चला जाता है और दूसरे विंग से नीली आती है)

नीली : निकाल दिया न मेरे घरवाले को ताने दे दे कर।

सुखू : रात दिन उसके कान में फुस फुस तो तुम करती रहती हो कि निकाला मैंने है।

नीली : उसे कुछ हो गया तो मैं कहां जाऊंगी ?
(सिसकने लगती है)
उसे कोई काम न मिले तो वह क्या करे ?

सुखू : तो मैंने उसे क्या कहा है? मेरे आने से पहले तुमने भगवान जान उसे क्या जली-कटी सुनाई थी। मेरा आना तो एक बहाना हो गया। वह तो पहले ही क्रोध से लाल-पीला हो रहा था।

नीली : मेरे घर वाले को कुछ हो गया तो मैं जहर खा लूंगी चाची। मेरे मां बाप भी अन्धे थे जिन्होंने मुझे इस नरक में लाकर फेंक दिया।

सुखू : तो अब कह अपने बाप से किसी दूसरी जगह बिठा दे।

नीली : तुम्हारे यहां यही रिवाज होगा ना।

सुखू : रिवाज होगा तेरे बाप के घर, तेरी मां के मायके में, तेरे भाई के ससुराल में।

नीली : तेरा मायका तो जैसे हरिद्वार है, सुन रखी है मैंने तुम्हारे मायके की बातें।
(रमा आती है)

रमा : राम राम चाची !

सुखू : (उदास मुंह से) राम राम ! (आंसू पोंछने लगती है)

रमा : क्या बात है चाची–रो क्यों रही हो।

नीली : जब कोई आ जाए तो यह आंसू पोंछ कर सच्ची हो जाती है।

सुखू : तू भी अपनी सास से यही सलूक करती है रमा ?

रमा : पर हुआ क्या?

नीली : हर रोज ताने देकर राजू के पिता को इसने घर से निकाल दिया है।

सुखू : (क्रोध से) क्यों झूठ बोलती है? वह भागा है तो तुमसे तंग आकर।

रमा : कहां गया है विजय भैया ?

सुखू : जाने कहां गया होगा बेचारा।

रमा : कहीं भी नहीं गया होगा। उसे भी अपने घर की हालत मालूम है। कहीं कोई काम-धंधा करने गया होगा।

नीली : पर यूं भी जाया जाता है कभी काम-धंधा करने। मुझे विश्वास है कि राजू का बाप वापस नहीं आने का।

सुखू : मुझे क्यों सुनाती हो, आप किया है आप भुगतो।

रमा : चाची घर तो एक गाड़ी है, उसे धकेलने के लिए हर आदमी को जोर लगाना पड़ता है। इतनी बोझिल गाड़ी एक आदमी के खींचने से नहीं चलती। सब मिलकर धकेलें तो मोटर से भी तेज भागने लगती है।

नीली : सो तो ठीक है रमा।

रमा : अब देखो कुछ दिनों से हमारे घर की हालत पतली हो रही थी। बाप बेटे ने बैठकर सलाह की कि क्या करना चाहिए। फैसला यह हुआ कि वह फौज में भरती हो। मुझसे मेरे ससुर ने पूछा। मैंने कहा मुझे इन्कार नहीं बेशक जाएं। वह खुश खुश गए, अब हर महीने मनीआर्डर आ जाता है। घर की गाड़ी जो रुक गई थी वह फिर चलने लगी है। (रुक कर) तुम्हारा छोटा सा कुनबा है, इसे संभालो। क्यों दूसरों से हंसी करवाते हो। (सुखू से) चाची घर में बड़ी तुम हो। बाकी सब छोटे हैं, नीली से या विजय भैया से कभी कोई गलती हो जाए तो क्षमा कर दिया करो।

सुखू : (आंसू पोंछते हुए) रमा बेटी मैं दिल की बुरी नहीं पर मेरी जबान जरा मेरे बस में नहीं।

रमा : नीली यह तेरा घर है। इसे संभालेगी तो तेरा ही कुछ संवरेगा। चाची ने बहुत दुःख भोगे हैं। इसकी बातों का बुरा न माना कर। (रुक कर) हां मैं यह कहने आई थी, आज रात हमारे घर कीर्तन है, तुम सब आना। अच्छा तो चलती हूं और घरों में न्योता देना है। ननद कोई है नहीं यह काम भी मुझे ही करने पड़ते हैं।

सुखू : तू तो पढ़ी-लिखी है भाई।

रमा : अच्छा चाची राम राम। (विंग की तरफ जाते हुए) राजू को भी साथ लेती आना, नीली।

नीली : (मुस्कराते हुए) अच्छा।

(रमा जाती है और उसके जाते ही राजू भी उठ कर पलंग पर लेट जाता है।)

(पर्दा आधा गिरता है और फिर उठ जाता है। स्टेज पर रोशनी बहुत मद्धम हो जाती है और फिर धीरे-धीरे सारे स्टेज पर फैलने लगती है। इस दौरान नीली और सुखू भी अपने स्थान से हट कर स्टेज के दूसरे भाग में दिखाई देती है। सुखू विंग की ओर मुड़ती है।)

नीली : (सुखू को विंग की ओर मुड़ते देखकर) सुबह-सुबह कहां जा रही हो चाची ?

सुखू : रात मैंने एक सपना देखा है, विजय राजी-खुशी है।

नीली : भगवान करे वह राजी-खुशी हों।

सुखू : बहुत दिन बीत गए घर को छोड़े हुए, जरा ज्योतिषी जी के पास हो आऊं। तू मेरे आने तक छाज में कुछ अनाज फटक ले।

नीली : अच्छा पर आना जल्दी चाची। कहीं बातों में न लगे रहना।

(सुखू जाती है)

(नीली छाज में पड़े अनाज को फटकने लगती है।

बाहर से कोई विजय सिंह का नाम लेकर पुकारता है। नाम दो तीन बार पुकारा जाता है।

नीली छाज को छोड़कर राजू को जगाने लगती है।)

नीली : राजू देख कोई बाहर पुकार रहा है, तेरे बाबू को। उठ बहुत देर हो गई, उठ भी अब। (आवाज फिर आती है) देख वह फिर आवाज आई।

(राजू आंखें मलते हुए उठता है और विंग से बाहर चला जाता है। नीली बड़ी चिंता भरी नजरों से विंग के पीछे आंखें गाड़े खड़ी रहती है।)

राजू : (वापस आकर) डाकवाला था। दो खत हैं, किसके खत हैं भला ?

नीली : तेरे बापू के, एक मेरे लिए होगा।

राजू : और दूसरा मेरे लिये।

नीली : नहीं तुम्हारे और तुम्हारी दादी के लिए।

राजू : नहीं मैं तो एक खत लूंगा।

नीली : अच्छा तू अलग ही ले लेना भाई (रुक कर) भला मेरा खत कौन सा होगा इनमें से।

राजू : यह सफेद लिफाफे वाला।

नीली : नहीं नीले लिफाफे वाला। मैं बहू हूं, रंग वाला

लिफाफा मेरा होगा इनमें से।

राजू : मैं बेटा हूं, रंग वाला मेरा होगा।

नीली : अच्छा तू ही ले लेना पर पढ़ेगा कौन इसे।

राजू : (सोच कर) मुझे तो पढ़ना आता नहीं।

नीली : जभी तो कहती हूं स्कूल में दाखिल हो जा। बापू के खत को पढ़ लिया करेगा।

राजू : अच्छा मैं कल से स्कूल जाया करूंगा।

नीली : पर खत तो अब पढ़ना है, तुम तो कहीं पांच साल में पढ़ सकोगे। (रुक कर) तुम मुन्शी को बुला लाओ।

राजू : वही जो ऐनक लगाए रखते हैं और जिनकी एक आंख कानी है।

नीली : हां हां वही पर राजू ऐसी बात नहीं कहा करते।

राजू : तो जाऊं मैं ?

नीली : हां जाओ। (राजू जाता है)

नीली : मैं बड़ी मूर्ख हूं जो मैंने इतना दुःख दिया कि वह घर छोड़ गया। हे भगवान मुझे क्षमा कर देना (हाथ जोड़ती है)

सुखू : (तनिक क्रोध से) अरे छाज में अनाज तो वैसे ही पड़ा है। तू बड़ी काम-चोर है नीली।

नीली : राजू के बापू का खत आया है। एक मेरा है और दूसरा तुम्हारा, यह लो अपना खत। (सफेद लिफाफा सुखू को देती है।)

(सुखू लिफाफे को चूम लेती है)

सुखू : भगवान सुखी रखे मेरे बेटे को ! ज्योतिषी जी ठीक ही कह रहे ।

नीली : क्या कह रहे थे वह ?

सुखू : यही कि तीन दिन के अन्दर-अन्दर विजय की कोई खबर आएगी ।

(राजू और मुन्शीजी का प्रवेश । नीली घूंघट काढ़ लेती है)

मुन्शी : राम राम विजय की मां !

सुखू : राम राम मुन्शी जी !

मुन्शी : बहुत दिनों में हमारी याद आई विजय की मां । (हंसते हुए) चलो आ तो गई, वह कहते हैं न कि सुबह का भूला···।

सुखू : (बात काट कर) तू बूढ़ा हो गया मुन्शी पर मसखरी करने से अब भी बाज नहीं आता ।

मुन्शी : इसी मसखरी से तो दिन काटे हैं, नहीं तो विजय की मां (हंसते हुए) बिना जोरू के जीवन कहां कटता है । बस यह जान लो कि मेरी मसखरी ही मेरी जोरू है । (सुखू, मुन्शी और नीली घूंघट के भीतर हंसती हैं)

सुखू : अच्छा विजय का खत पढ़ दो मुन्शी ।

मुन्शी : (लिफाफा खोल कर खत निकालता है, और आंखें सुकेड़ कर पढ़ने लगता है) मेरी प्यारी हर

घड़ी याद आने वाली, कभी न भूलने वाली। विजय की मां यह खत विजय का है या तुम्हारे घरवाले का ?

सुखू : मेरा घरवाला तो स्वर्ग में है मुन्शी ! तुम्हारा दिमाग तो नहीं फिर गया।

मुन्शी : भाई, फिर यह खत बेटे का नहीं दीखे, किसी और .....

सुखू : अच्छा तो आगे पढ़ो।

मुन्शी : (फिर पढ़ता है) मेरी प्यारी हर घड़ी याद आने वाली .....

सुखू : तू आगे क्यों नहीं पढ़ता।

मुन्शी : ठहर तो जा राजू की दादी। (फिर दोहराता है) हर घड़ी याद आने वाली, कभी न भूलने वाली।

सुखू : तू आगे भी तो पढ़ बाबा !

मुन्शी : देख विजय की मां मुझे बाबा तो मत कह, मैं खत नहीं पढ़ूंगा किसी दूसरे से पढ़वाती फिरना।

सुखू : अच्छा पढ़ तो सही।

मुन्शी : हाय फिर भुला दिया। शुरू से पढ़ना पड़ेगा फिर। कभी न भूलने वाली मेरी (पत्र को घूर-घूर कर देखता है) मेरी (रुककर) यह नाम तो कोई और है सुखू, तुम्हारा तो नहीं। तुमने नाम बदल तो नहीं लिया कहीं ?

सुखू : नीली तो नहीं कहीं ?

मुन्शी : हां हां नीली। (सिर हिला कर)

सुखू : वह तो मेरी बहू है।

मुन्शी : हाय राम, क्या पिला दिया था तुमने। यह मसखरियां कब तक करती रहोगी मुझसे।

(नीली राजू के हाथ में लिफाफा देती है और उसके कान में कुछ कहती है)

राजू : यह रहा दादी का खत, वह मां का है। उसे हम रमा दीदी से पढ़वा लेंगे। दे दो।

मुन्शी : जो काम की चीज है वह रमा दीदी के लिए है। तो यह भी उसी से पढ़वा लेना। हम चलते हैं।

(मुन्शी जब जाने को पीठ मोड़ता है तो राजू मुंह पर हाथ रखकर आवाज पैदा करता है और सब हंसने लगते हैं।)

मुन्शी : ठहर गधे की पूंछ! (रुक कर) विजय की मां, मैं जरा फुरसत में आऊंगा खत पढ़ने।

(विंग की तरफ बढ़ता है और पर्दा गिर जाता है।)

दूसरा दृश्य

(एक छोटा सा—मैस का कमरा। तीन तिपाइयां, उनके पास दो दो कुर्सियां और प्रत्येक तिपाई पर मेजपोश और ऐशट्रे है। तिपाइयां पर दो-एक अखबार और पत्रिकाएं पड़ी हुई हैं। अधिकतर फौजी अखबार की कापियां हैं। विजय के अलावा और वहां कोई नहीं। विजय बीच की तिपाई के साथ कोहनी टेके बैठा है जैसे कि बहुत गहरी सोच में पड़ा हो। उसके हाथ में अधजली सिगरेट है। जब परदा उठता है तो वह जेब से एक पत्र निकाल कर पढ़ने लगता है। यह पत्र उसकी मां का है।)

विजय : (ऊंची आवाज में पत्र पढ़ता है—)

तुम्हारे भेजे हुए रुपये मिल गए हैं। वह तुमने

बहू के नाम से भेजे थे। मैं अभी मरी तो नहीं कि तुम रुपए भी उसके नाम से भेजो। सारे गांव में मेरी नाक काट दी है। और उस पर तुम्हारी लाडली ताने देकर कहती है कि तुमने अपने बेटे को गिरवी रख दिया है और उसका ब्याज खा रही हो। तुम बहू को अपने पास ही बुला लो। मुझे रुपये नहीं चाहिएं। मैं भीख मांग कर पेट भर लूंगी। (क्रोध से) हे भगवान किन जालिमों से पाला पड़ा है? (पत्र को टुकड़े-टुकड़े करके ऐशट्रे में डाल देता है और उसके साथ ही सिग्रेट को भी रखकर मसल देता है। फिर जेब से नीली का पत्र निकाल कर ऊंची आवाज में पढ़ने लगता है)

तुम्हारे रुपये आने से पहले मां अच्छी भली थी। बस जिस दिन मेरे नाम का मनीआर्डर आया उसी दिन से मेरी जान की शत्रु हो गई हैं। मैंने डाकिए से लेकर सारे रुपये उसके हाथ में पकड़ा दिये और उसने क्रोध से सब फर्श पर फेंक दिए। जिस लक्ष्मी के लिए तुम धक्के खा रहे हो, मां उसका अपमान कर रही है। सभी औरतों के कान भरती रहती है। मेरा तो कहीं पर जाना भी मुश्किल हो गया है। जब जाऊं कोई न कोई ताना सुनना पड़ता है। अगर मां इसी तरह तंग करती रही तो मैं मायके चली

जाऊंगी। (क्रोध से) मायके में जाओ चाहे नरक में मेरी बला से।

दूसरा पत्र भी फाड़ कर उसी तरह ऐशट्रे में डाल देता है। दोनों हाथों से सिर थाम लेता है।

(परेशानी से) मैंने रुपये कमाने के लिए अपने आप को मौत के मुंह में झोंक रखा है और उनका मन अब भी शांत नहीं हुआ। घर में था तो दिन रात काटती फिरती थी अब यहां हूं तो यहां भी चैन नहीं लेती। ठीक कह रहा था कल हमारा कप्तान। एक कमरे में दो शेर इकठ्ठे रह सकते हैं पर एक घर में दो औरतें इकट्ठी नहीं रह सकतीं।

(कुर्सी से उठकर टहलने लगता है।)

(दोनों अपने खत लिखाने के लिए एक दूसरे के पास जाती हैं और उनके आगे अपने दुखड़े रोती हैं। तुम्हारी आपस में नहीं बनती तो घर में रहो। दूसरों के आगे क्यों रोती हो। गांव भर में मेरी नाक कटवा रही हैं। यहां छोटे से लेकर बड़े तक मेरी इज्जत करते हैं और वहां अपने घर में मेरी कुत्तों जैसी भी कदर नहीं। पर अब क्या करूं क्या इलाज है इसका मेरे पास। फिर कुर्सी पर बैठ जाता है। जग्गू दाखिल होता है।)

जग्गू : अरे तू यहां अकेला बैठा क्या करे है ? वहां भंगड़ा हो रहा है मैदान में, वह मिरासी लड़का इतने गजब का ढोल बजाता है कि दिल उछलने लगता है। लो सिग्रेट पियो मैं सिग्रेट आफर नहीं किया करता, अपना जला हुआ सिग्रेट दिया करता हूं लो। (सिग्रेट देता है)

विजय : नहीं मुझे नहीं चाहिए।

जग्गू : (उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) पी ले सिग्रेट मेरे लाल ! (रुक कर) घर की याद आ रही है क्या ? हमारी तो जैसे बीवी ही नहीं। बच्चू एक अदद चांद सी बीवी का पति और मुब्लिग तीन अदद जिसका निस्फ डेढ़ होता है बच्चों का बाप हूं। क्या बहुत सुन्दर है तुम्हारी बीवी ?

विजय : देखो तंग न करो आओ ऐश करो।

जग्गू : नो ऐश बिदाउट कैश—अपने पास पैसा तो एक नहीं ऐश किससे होगी ? तुम्हारे पास कोई फालतू हो तो दे दो।

विजय : (जेब से सिगरेट का पैकेट निकाल कर देता है) लो !

जग्गू : सारा पैकेट दे दिया। शुक्रिया ! विजय सिंह तुम बहुत बड़े रईस मालूम होते हो। शायद सुखराली गांव के तुम पहले आदमी हो जिसने सिगरेट मांगने पर पूरा पैकेट दे दिया, सुखराली ही क्यों सारे हिन्दुस्तान में। (रुककर) जेब में से एक

लिफाफा निकालता है और उसमें से कुछ फूल निकाल कर दिखाता है।) ये फूल आज मेरे तीन अदद बच्चों की मां ने लिफाफे में डाल कर भेजे हैं कि हमारे यहां चौथा भी आने वाला है।

विजय : भगवान के लिए मुझे दिक न करो, मैं भाग जाऊंगा।

जग्गू : नहीं नहीं मैं ही भाग जाता हूं। तुम यहीं रहो, अच्छा हाथ तो मिला लो। (विजय बड़ी बेदिली से हाथ मिलता है। जग्गू जाता है)

विजय : ये लोग कितने खुश हैं, कितने शांत हैं, कितने मजे में हैं। एक मैं हूं जिसकी जिन्दगी में सिवाय रोने और जलने के कुछ नहीं। (कुर्सी से उठकर टहलने लगता है) पर अब मैं करूं भी क्या ? या मैं मर जाऊं या बीवी और मां में से एक मर जाए। इसके अलावा कोई चारा नहीं। (कांशी दाखिल होता है)

कांशी : चौधरी विजय सिंह किसे मार रहे हो भाई, मां को या बीवी को ? मेरे विचार में बीवी का मर जाना बेहतर है। बीवियां एक छोड़ कई मिल सकती हैं, मां सिर्फ एक ही बार में मिलती है।

विजय : यार क्या कहूं, मैं बेहद मुसीबत में हूं।

कांशी : मैं तुम्हारे गांव का नहीं तो उसके साथ का तो हूं, झाड़सा सुखराली से कोई दूर तो नहीं। मैं भी चौधरी हूं इस नाते तुम्हारा भाई भी हूं।

मुझे बताओ क्या तकलीफ है तुम्हें ।

विजय : एक जाहिल और बदतमीज औरत मेरे पल्ले बंधी है, न उससे छुटकारा मिल सकता है न वह बदल सकती है ।

कांशी : अच्छी बीवी, अच्छा घर और अच्छा नौकर, किसी किस्मत वाले को मिलती हैं ये चीजें ।

विजय : इतने बड़े संसार में एक मैं ही बदकिस्मत हूं ।

कांशी : नहीं और भी कई होंगे, लेकिन जो अपनी को बदलने की कोशिश करे वह बदल भी सकता है ।

विजय : (आह भर कर) किस्मत को कौन बदल सकता है, दोस्त !

कांशी : तू आज हां कर मैं तुझे दसवीं क्या बी०ए० पास लड़की दिला सकता हूं । तू फौज में मुलाजिम है, अच्छे पैसे कमा रहा है । तेरा घर है, जमीन है । क्या चीज नहीं है तेरे पास ?

विजय : मैं दूसरी शादी नहीं करूंगा ।

कांशी : नहीं करेगा तो जिन्दगी भर नरक भोगेगा । तू एक बार हां कर दे मैं महीने भर में तुम्हारी बात पक्की कर दूं । एक लड़की मेरी नजर में है । पकी हुई फसलों जैसा रंग, निखरी हुई बहारों जैसी जवानी, बिलकुल इन औरतों की तरह जो बाजार

में हाथ में हाथ दिए इधर-उधर घूमती-फिरती हैं।

विजय : (अपने आप से) पकी हुई फसलों जैसा रंग, बहारों जैसी जवानी !.....

कांशी : विजय तू मुझ पर भरोसा रख, भगवान ने उसे तुम्हारे लिए ही बनाया है।

विजय : मुझे डर है खुशी जैसे मेरी जिंदगी में कभी नहीं आएगी, मैंने जब भी उसे छूने की कोशिश की है वह हंसती हुई दूर भाग गई है। दूर उन हदों पर जहां जमीन और आसमान मिलते हैं। जहां शफक होती है और चांद चमकता है।

(अपना सिर तिपाई पर पटक देता है।)

कांशी : ये खत तुमने फाड़े हैं, यूं घर के खतों को मैस में नहीं फाड़ा जाता। पगले। उठ मेरे साथ चल, मैदान में भंगड़ा हो रहा है, बहुत सी औरतें भी आ रही हैं, तुम्हारा मन बहल जाएगा।

(उसे बांह से पकड़कर उठाता है और फिर दोनों कमरे के बाहर निकल जाते हैं। उनके जाते ही दूसरे विंग से जग्गू और रघू दाखिल होते हैं और एक कोने में खड़े हो जाते हैं।)

रघू : हो सकता है तुम्हारी बात ठीक हो जग्गू, लेकिन मुझे यकीन नहीं आता।

जग्गू : मुझे कांशी ने खुद बताया है, वह तो कहता है

कि विजय ने हामी भर ली है।

रघू : मैं और विजय एक ही गांव के हैं, इकट्ठे खेले हैं, मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं। वह ऐसी बात कभी नहीं करेगा। मैं कुछ दिनों के लिए यहां से बाहर चला गया था, उसे मिला नहीं। मेरी बीवी का खत आया था कि उसमें उसने विजय की बीवी की भी राम-राम लिखी थी।

जग्गू : पर अगले हर्ज भी क्या है, अगर मियां बीवी एक दूसरे से खुश नहीं तो वह अलग भी हो जाएं इसमें बुराई भी क्या है।

रघू : अलग हो जाना और बात है और एक बीवी के होते हुए दूसरी शादी कर लेना दूसरी बात है, यह तो किसी भी तरह जायज नहीं।

जग्गू : भाई अपन को तो जायज नाजायज का पता नहीं, अपने तीन बच्चे हैं। आज भी अगर कोई औरत शादी के लिए कहे तो अपन तैयार हैं। भई, बच्चा अगर शादी न करेगा तो और संन्यास लेगा !

(विंग की तरफ देखकर)

विजय आ रहा है मैस की तरफ। तुम्हें उससे कुछ बातें करनी हों तो मैं उठकर चला जाऊं।

रघू : हां, तुम्हारे सामने वह खुलकर बात न करेगा।

जग्गू : खुल कर बात न करेगा तो दुःख पाएगा।

(विजय दाखिल होता है)

विजय : जय हिन्द रघू, जय हिन्द जग्गू !

दोनों : जय हिन्द !

रघू : बहुत दिनों में नजर आते हो विजय।

विजय : तुम भी तो बहुत दिनों में आते हो याद।

जग्गू : अच्छा भाई तुम तो विरह के रोने रोओ, अपन तो चलते हैं।

(जग्गू चला जाता है। रघू और विजय कुर्सियों पर बैठ जाते हैं। विजय के हाथ में आधा जला हुआ सिग्रेट है।)

रघू : यार सिग्रेट मत पिया करो।

विजय : सिग्रेट मत पियो, शराब मत पियो, शराब को हाथ न लगाओ, गोश्त को न छुओ ! आखिर करो क्या ? बस एड़ियां रगड़ कर मर जाओ। तुम हमसे जिंदा रहने का हक क्यों छीनते हो ?

रघू : जिंदा रहने का हक मैं नहीं छीन रहा, तुम छीन रहे हो।

विजय : मैं किसका हक छीन रहा हूं ?

रघू : मैंने सुना है तुम दूसरी शादी कर रहे हो।

विजय : किसने कहा है तुम्हें ?

रघू : जग्गू ने।

विजय : जग्गू बकता है ।

रघू : हरदयाल ने ।

विजय : बकवास करता है ।

रघू : कांशी ने । (विजय खामोश रहता है) कहो कांशी भी झूठ बोलता है । (बात पलट कर) सुनो कुछ दिन हुए घर से खत आया था रमा का । नीली ने तुम्हें प्रणाम लिखा है ।

विजय : खास लिखा है ।

रघू : सच कहता हूं वह खत ट्रंक में रह गया नहीं तो पढ़वा देता । रमा ने लिखा है कि अखिल भारतीय सम्मेलन की काम करने वाली कुछ सुखराली में आई थीं । वे वहां अपनी संस्था की ब्रांच खोलना चाहती थीं । तुम जानो रमा ही एक पढ़ी-लिखी लड़की है सारे गांव में, उन्होंने उसे संस्था का प्रेजीडेंट बना दिया है । अब वह गांव में औरतों के लिए काम शुरू करने की सोच रही है । तुम कहो तो नीली भी उसके साथ काम करे ।

विजय : मुझे नीली से क्या, मैंने तो दूसरी शादी करने का फैसला कर लिया है ।

रघू : विजय मेरी सलाह मानो तो इस चक्कर में न पड़ो । तुम्हें नीली की जिंदगी खराब करने का कोई हक नहीं ।

विजय : अपनी जिंदगी बेशक बरबाद हो जाए।

रघू : यह तुम्हारा ख्याल है कि दूसरी शादी से तुम्हारी जिन्दगी संवर जाएगी। हमारे समाज में यह सब नहीं चल सकता।

विजय : मुझे समाज से क्या ? अपने घर का चिराग बुझा कर मंदिर में ज्योति जलाना हिमाकत है।

रघू : लेकिन मंदिर की जोत इसलिए बुझा दो कि तुम्हारे घर में अंधेरा है। यह भी गलत है विजय।

विजय : मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं करना चाहता।

रघु : क्योंकि तुम डरते हो कि तुम हार जाओगे।

विजय : तुम आइंदा इस मामले में मुझसे कोई बात-चीत न करना।

रघू : तुम मेरे दोस्त हो मेरे बचपन के साथी हो, जब भी तुम्हें ठोकर लगेगी विजय मैं अपना खून जला कर तुम्हारा रास्ता उजाला करूंगा।

(बिगुल बजने की आवाज आती है)

विजय : बिगुल बज रहा है चलो।

रघू : वक्त मिले तो गिनती के बाद मिलना, बातें करेंगे।

विजय : मैं फारिग नहीं हूं।

रघू : (हंसते हुए) अच्छा कोई बात नहीं।

(पर्दा गिरता है)

तीसरा दृश्य

(वही पहले दृश्य वाला घर, नीली कोने में रखी चक्की में अनाज पीस रही है। करीब ही राजू खेल रहा है, रमा दाखिल होती है)

रमा : आज तो दोपहर में ही चक्की पीस रही हो ? (नीली चक्की छोड़कर खड़ी हो जाती है और मुस्कराने लगती है)

नीली : आज सुबह देर से जागी थी, रात के लिये आटा चाहिये।

रमा : तो मैं फिर आऊंगी।

नीली : क्यों चक्की पीसने को तो सारा ही जीवन पड़ा है।

रमा : रमा भी तो कहीं मरने नहीं जा रही है।

नीली : मरें तुम्हारे दुश्मन रमा ! सारे गांव में और

कौन है जिससे दुख-दर्द बांट सकती हूं ।

(राजू खिलौने छोड़कर पास आ जाता है ।)

राजू : मां ! मैं खेलने जाऊं ?

नीली : इसे तो कोई बहाना चाहिए भागने का, जाओ पर उधर सड़क पर मत जाना ।

राजू : अच्छा ।

(राजू जाता है । नीली और रमा दोनों चारपाई पर बैठ जाती है ।)

नीली : रघु भैया का कोई खत आया ? राजू के बापू ने कोई खत नहीं लिखा ।

रमा : जो खत तुमने कुछ दिन हुए मुझसे लिखवाया था उसका भी जवाब नहीं आया ।

नीली : नहीं ।

रमा : मुझे याद है किस तरह शरमा शरमा कर तुमने यह खत लिखवाया था । सच बड़ा मजा आ रहा था । तुम बात बात पर शरमा रही थी और मैं तुम्हें और दिक करती जा रही थी ।

नीली : कोई खत लिखे तो कोई आए न, (रुक कर) तुम्हें क्या लिखा है रघु भैया ने ?

रमा : तुम्हें एक बात कहूं नीली, बहुत दिनों से सोच रही थी तुम्हें कह दूं । पर मुझे खुद उस पर विश्वास नहीं था । सिर्फ उड़ी उड़ाई बात थी । मैंने फिर तुम्हारे भैया को लिखा । उनके जवाब से लगता है कि बात गलत नहीं है ।

नीली : क्या बात है रमा ?

रमा : जहां विजय भैया और वह है, वहां झाड़सा और बादशाहपुर के दो छोरे हैं। वही कुछ अंट शंट चला रहे हैं।

नीली : क्या अंट शंट चला रहे हैं।

रमा : उनके खत से तो अब मुझे भी यकीन होने लगा है।

नीली : पर आखिर है क्या ?

रमा : वह झाड़सा और बादशाहपुर के आदमी विजय भैया को फुसलाकर दूसरा ब्याह कर लेने पर राजी कर रहे हैं।

नीली : (चौंक कर) दूसरा ब्याह राज के बापू का ?

रमा : उन्होंने लिखा है कि बात भी पक्की हो गई है।

नीली : रघू भैया ने कुछ नहीं किया ?

रमा : वह अपनी तरफ से बहुत कोशिश कर रहे हैं, पर विजय भैया को जाने क्या हो गया है, किसी की सुनता ही नहीं।

नीली : क्या मुझे यह दिन भी देखना होगा। (रोते हुए)

रमा : सच मानो तो मैं इसे अब तक मजाक ही समझती रही, नहीं तो तुम से पहले ही बात कर देती। (रुक कर) पर खैर फिकर न करो।

नीली : मैं क्या कर सकती हूं ?

रमा : यह मामला पंचायत में रखेंगे। देश आजाद है, गांव के हर झगड़े का फैसला पंचायत करेगी।

पंचायत राज्य ही तो हमारा लक्ष्य है।

नीली : मैं चौपाल पर नहीं जाऊंगी, यह मुझसे न हो सकेगा।

रमा : यह तुम्हारी जिंदगी और मौत का सवाल है, झूठी शरम में पड़कर अपनी जिंदगी बरबाद करना चाहो तो तुम्हारी मर्जी। आजाद देश में औरत और मर्द के बराबर अधिकार होते हैं। अगर मर्द अपने अधिकारों के लिए लड़ सकता है तो औरत भी लड़ सकती है।

नीली : मुझसे पंचायत के सामने नहीं जाया जाएगा।

रमा : सिर्फ मेरे साथ चलना तुम, मैं बात करूंगी तुम्हारी तरफ से पंचों के साथ और अगर पंचायत ने भी अन्याय का साथ दिया तो वह मामला हम दूर तक ले जाएंगे। मैं अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की सदस्य हूं, तुम चिंता मत करो।

नीली : मालूम होता है कि भगवान ने हमारा साथ छोड़ दिया है।

रमा : भगवान हमारा ठेकेदार नहीं है नीली, जो हमारी बात में दखल देता फिरे। जीवित रहने के लिए संघर्ष करना हमारा कर्त्तव्य है, भगवान का नहीं। भगवान ने हमें जीवन दिया है उसकी रक्षा करना हमारा फर्ज है। (रुक कर) मैंने इस बात का जिकर अपने ससुर जी से भी किया था।

वह भी गांव के पंच हैं। वह मेरे साथ सहमत हैं, कह रहे थे कि मैं खुद आऊंगा विजय के घर। शायद आ जाएं।

(कुंडी खटखटाने की आवाज)

शायद वही है। मैं देखती हूं।

(रमा विंग तक जाती है और शमशेर दाखिल होता है। नीली घूंघट काढ़ लेती है और शमशेर सिंह के पांव छूती है।)

शमशेर : जुग-जुग जियो बेटी।

(नीली उठकर शमशेर सिंह को बैठने के लिए मूढ़ा देती है। शमशेर सिंह बैठ जाता है।)

शमशेर : रमा बेटी, तुमने कर ली बात नीली से।

रमा : हां पिताजी, वह चौपाल पर जाने से घबराती है।

शमशेर : देखो बेटी, मैं भी गांव का पंच हूं कि आज तक गांव की चौपाल पर बीरबानी नहीं चढ़ी। पर जमाना बड़ी तेजी से बदल रहा है। हम कब तक लकीर पीटते रहेंगे। एक न एक दिन हमें अपनी औरतों को वह अधिकार देना ही होगा जो हम अब तक उनसे छीनते रहे हैं।

रमा : यही तो मैंने कहा है पिताजी।

शमशेर : गांव में यह बहुत बड़ी घटना है, अगर पंचायत के होते हुए विजय दूसरी शादी कर ले तो इससे बढ़कर हमारे लिये और शर्म की क्या बात हो

सकती है। यह सिर्फ तुम्हारा नहीं गांव भर की बहुओं का सवाल है। मैं तुम्हारे साथ हूं, पंचायत को बुलाता हूं, तुम सिर्फ वहां तक आ जाना। चौपाल पर आ गई तो मानो तुमने आधी जंग जीत ली।

रमा : और अगर पंचायत अपनी जिद पर अड़ी रही तो ?

शमशेर : वह मैं सब ठीक कर लूंगा और अगर अड़ भी गई तो और भी रास्ते हैं। (रुककर) आज विजय की मां कहां है।

रमा : खेतों में है।

शमशेर : घर पर होती तो उससे बात कर लेता। खैर अब तुम ही बात कर लेना उससे, मैं चलता हूं। (नीली से) नीली मैंने रमा को पूरी आजादी देकर गांव वालों को एक नया रास्ता दिखाया है, अब वह रास्ता आगे ही आगे जाएगा नहीं, विश्वास रखो। (शमशेर सिंह चला जाता है)

रमा : अब भी तुम डरती हो पगली, अब तो इतने जने तुम्हारे साथ हैं।

नीली : जो बेड़ियां सैकड़ों वर्षों से हमारे पांव में पड़ी हैं उन्हें तोड़ना आसान नहीं रमा।

रमा : अब तो वह तोड़नी ही होगी। क्षण भर की आजादी हजार साल की गुलामी से बेहतर है।

नीली : ठीक कहती हो।

रमा : (खुश होकर) शाबाश ! (रुककर) अच्छा अब मैं चलती हूं, पंचायत का इन्तजाम होने पर फिर तुम्हें साथ ले जाऊंगी।

(उधर दूसरे विंग से सुखू राजू का हाथ पकड़े दाखिल होती है। रमा जाती है।)

नीली : (अपने आप से) भगवान यह क्या होने वाला है ! किस अपराध की सजा मिल रही है मुझे। चुप रहूंगी तो लुट जाऊंगी, बोलूंगी तो बुरी बनूंगी, क्या करूं ? किधर जाऊं ? (रोने लगती है।)

सुखू : इस छोरे ने तो नाक में दम कर रखा है। इधर तालाब पर पहुंचा हुआ था, पत्थर मार रहा था ढोरों को। कहीं गिर जाता तो आफत आ जाती मेरी जान की। (नीली के करीब जाकर) अरी तू क्या कर रही है बहू, रो रही हो। यह रोज-रोज का रोना अच्छा नहीं बहू, बड़ा अशुभ होता है। (नीली को झंझोड़ कर) आखिर बात क्या है कुछ बोलो तो सही।

नीली : (रोते हुए) राजू का बापू दूसरा व्याह करने लगा है।

सुखू : तुम्हें किसने कहा ?

नीली : सबको पता है।

सुखू : यह कैसे हो सकता है ? तुम्हारे घर में होते हुए वह दूसरी बहू कैसे ला सकता है ?

नीली : तुम्हारा भी यही ख्याल है मां ?

सुखू : और नहीं तो क्या ? एक बहू के होते हुए कौन निर्लज्ज है जो उसे दूसरी बहू दे रहा है। माना मेरा लड़का है तुम भी तो मेरी बहू हो, राजू भी तो मेरा पोता है। (रुक कर) पर इसका उपाय क्या है।

नीली : रमा आई थी, कह रही थी पंचायत के सामने जाना पड़ेगा। शमशेर ताऊ भी आए थे, कह रहे थे—मैं तुम्हारे साथ हूं, पंचायत अन्याय नहीं करेगी।

सुखू : चौपाल पर जाना होगा ?

नीली : हां, मैं नहीं जाऊंगी।

सुखू : नहीं बहू यह न होगा। यह विजय की दूसरी शादी कर लेने से भी कठिन है।

नीली : तो फिर कौन करेगा मेरी सहायता।

सुखू : रमा से कहो कोई और तरीका बताए। वह पढ़ी-लिखी लड़की है, बीरबानियों में काम करती है। कोई न कोई दूसरा रास्ता बताएगी।

नीली : उसके पास यही रास्ता है। (फिर रोने लगती है।)

सुखू : मैं क्या करूं अब। चौपाल पर कैसे जाना होगा ?

यह भी कभी हुआ है ?

(रमा दाखिल होती है ।)

रमा : चौपाल पर जाना होगा, चाची, सारी पंचायत तुम्हारा इन्तजार कर रही है ।

सुखू : तो ले जाओ नीली को, मैं नहीं जाऊंगी ।

रमा : यह कैसे हो सकता है, घर की मालकिन साथ न हो तो नीली की कौन सुनेगा ।

सुखू : मैं मालकिन नहीं हूं ।

रमा : यह केवल नीली के जीवन की बात नहीं चाची तुम्हारे जीवन की भी बात है, गांव की हर सास और बहू की बात है । अगर हर सास यह चाहती है कि उसके घर में एक बहू के होते हुए दूसरी बहू आ जाए और हर बहू यह चाहती हो कि उसकी सौत उसके जीवन में आग लगा दे, तो फिर ठीक है । कोई मत चलो चौपाल पर, पंचायत खुद ही उठ जाएगी और हर घर एक नरक बन जाएगा ।

सुखू : तू पंच की बहू है, मैं गरीब घर की औरत हूं । तुम्हें कोई आंख उठा कर नहीं देख सकता । मुझ पर लोग उंगलियां उठाएंगे ।

रमा : न्याय में अमीर और गरीब का सवाल नहीं होता चाची, इन्साफ के तराजू में शहजादे भी तुल जाते हैं और गरीब बेकार भी । (रुक कर) तुम

दोनों कुछ मत कहना, सिर्फ मेरे साथ चलो मैं खुद बोलूंगी, तुम्हारे साथ न होने से हमारी जीत न हो सकेगी।

सुखू : अगर तुम्हारी जीत इस तरह हो सकती है तो फिर चलो। (नीली से) आज जीवन में पहली बार चौपाल में पांव रखूंगी। अगर यह पाप है तो इसकी सजा मिलेगी और अगर.....

रमा : यह पुण्य है चाची। स्त्री जाति का उपकार। इसके संघर्ष की पहली विजय (नीली से उसका हाथ पकड़ते हुए) चलो आज हम एक नये रास्ते का निर्माण करें।

(पर्दा गिरता है)

चौथा दृश्य

(गांव की चौपाल। सारे पंच बैठे हैं। दरमियान में एक हुक्का पड़ा है और उधर कोने में मिट्टी की अंगीठी में चिलम भरने के लिए आग सुलग रही है, थोड़ा धुआं उठ रहा है।

उनसे जरा इधर छोटी जाति का एक आदमी धन्नू बैठा है।)

पहला पंच : चौधरी शमशेर, भाई हमारे गांव की यह पहली घटना है।

दूसरा पंच : पहली है तो क्या है, दूसरा व्याह कर लेना कौन सा जुर्म है।

तीसरा पंच : भई दिल लगने की बात है जहां लग जाए।

सरपंच : (धन्नू से) अरे धन्नू जरा चिलम ताजी करना।

(धन्नू अपनी जगह से उठकर चिलम उठाता है और उसमें नई आग डालकर उसे फिर से हुक्के पर जमा देता है।)

दूसरा पंच : (सरपंच से) तुम्हारी क्या राय है जैलदार, तुम उमर में सबसे बड़े हो और तुमने दुनिया देख रखी है।

सरपंच : भई मैं तो सारी बात सुनकर ही राय दे सकता हूं, विजय की बहू को आ लेने दो।

पहला पंच : पर यह तो अनर्थ है कि बीरबानियां पंचायत के सामने आएं।

सरपंच : यह कोई अनर्थ नहीं। अगर औरतें वजीर बन सकती हैं तो वह पंचायत को न्याय करने के लिए क्यों नहीं कह सकतीं।

शमशेर : (विंग की तरफ देखते हुए) वह आ रही हैं औरतें (पंचों से) ऐसी-वैसी बात मत कहना कोई, नहीं तो मुझसे बुरा न होगा दूसरा।

(रमा, सुखू, नीली, और राजू दाखिल होते हैं। रमा सबसे आगे और नीली सबसे पीछे। वे सब पंचायत के सामने खड़ी हो जाती हैं। रमा ने साड़ी बांध रखी है। सुखू और नीली ने घाघरा पहन रखा है और घूंघट काढ़े हुए हैं, राजू ने सिर्फ कमीज पहन रखी है।)

रमा : पंच गांव वालों के लिये भगवान के समान होते हैं। गांव वाले खुद उन्हें चुनते हैं और फिर उनके फैसले को मानना कर्त्तव्य समझते हैं। यह आप सबको मालूम ही है कि आपको चौपाल में इकट्ठे होने के लिए क्यों कहा गया है। यह गांव भर की इज्जत और एक मासूम औरत के जीवन का सवाल है। आप गांव में रहने वाले हर मर्द और औरत के रक्षक हैं, यही भरोसा लेकर एक दुखी औरत आप के सामने आई है। गांव में शायद यह पहला मौका है कि औरतें चौपाल में खड़ी हैं। कुछ लोग इसे शायद बुरा भी समझें पर न्याय करते समय इस बात को भूल जाइए यही मेरी प्रार्थना है।

पहला पंच : (नीली से) विजय की बहू क्या यह सत्य है

कि तुम्हारा आदमी दूसरा व्याह करने वाला है।

(नीली बोलती नहीं सिर्फ सिर हिला देती है।)

पहला पंच : तुम्हें कैसे मालूम हुआ ?

रमा : मैंने इसकी अच्छी तरह जांच पड़ताल की थी और जब मुझे यह विश्वास हो गया कि बात पक्की है तो मैंने इसे बताया।

दूसरा पंच : तुम्हारे पास इसका क्या सबूत है ?

रमा : वह खत जो विजय भैया ने लड़की के बाप को लिखा पर डाक में डालना भूल गया। वह खत मेरे पति ने मुझे भेज दिया था।

सरपंच : कहां है वह खत ?

रमा : यह रहा। (खत निकाल कर दिखाती है।)

शमशेर : पर इस सबसे क्या फायदा है, मैंने रघू की सारी खतो-किताबत पढ़ी और मुझे यकीन है कि विजय बादशाहपुर के किसी चौधरी की लड़की से दूसरी शादी की बातचीत कर रहा है।

दूसरा पंच : अच्छा विजय की बहू, तुम्हारा आदमी क्यों दूसरा व्याह करना चाहता है ?

रमा : (क्रोध से) उसका दिमाग खराब है और क्या।

सरपंच : पर कोई कारण भी होगा आखिर ?

(नीली रमा के कान में कुछ कहती है।)

रमा : नीली पढ़ी-लिखी नहीं है इसलिये।

सरपंच : कल तक तो गलियों में मारा-मारा फिरता था आज साहब बहादुर बन गया है।

दूसरा पंच : बन तो गया है न कुछ।

शमशेर : इसका यह मतलब तो नहीं कि वह अपनी घरवाली को निकाल दे। गांव के और छोकरे भी तो लाम पर गए हैं। सबने आकर अपनी अपनी घरवालियों को छोड़ दिया तो क्या होगा। यह सिर्फ नीली का सवाल नहीं, गांव की सारी बहुओं का सवाल है।

पहला पंच : (नीली से) कितने साल हुए तुम्हारी शादी को ?

(नीली रमा से कुछ कहती है।)

रमा : आठ साल।

दूसरा पंच : और अब बेटा जी को ख्याल आया है दूसरी बहू लाने का ?

सरपंच : (सुखू से) तुम्हें भी कुछ कहना है सुखू भाभी ?

सुखू : नई बहू आ गई तो मेरा गुजारा कैसे होगा ?

शमशेर : तो तुम भी उसके खिलाफ हो ?

सुखू : हां।

रमा : बहुत दिनों मनमानी कर ली मर्दों ने।

औरतें इसे बरदाश्त करने को तैयार नहीं, जब चाहा औरत को घर से निकाल दिया, जब चाहा उस पर सौत बिठा दी। कैद में रखकर बेचारी को मुर्दा कर डाला है।

पहला पंच : (मुस्करा कर) अब तुम जो जान डाल रही हो मुर्दे में !

रमा : (गुस्से से) मैं ही नहीं, मेरे साथ हजारों औरतें और शामिल हैं जो अपने अधिकारों के लिए कट मरने को तैयार हैं। मर्द ने आज तक औरत को पैर की जूती समझा है और अब वह समय दूर नहीं जब यही जूती उसके अपने सिर पर पड़ेगी, खटाखट खटाखट। तब याद आएगा छठी का दूध।

(सारे पंच हंसने लगते हैं।)

दूसरे पंच : और गांव की बात हम नहीं जानते पर सुखराली में बगावत जरूर होगी, यह साफ दीख रहा है।

रमा : सुखराली में ही नहीं, झाड़सा, बादशाहपुर में, सारे गुड़गांव में और फिर सारे पंजाब में और फिर पूरे भारत में। अब औरतें जाग उठी हैं। उनकी भावनाओं को दबाना आसान नहीं। हथेली पर सूरज उगेगा तो रोशनी हर जगह होगी।

सरपंच : (नीली से) विजय की बहू, फर्ज किया विजय दूसरा विवाह कर लेता है तो तुम क्या करोगी ।

(नीली रमा के कान में कुछ कहती है ।)

रमा : कहती है मैं कुएं में छलांग लगा कर डूब मरूंगी । लेकिन यह गलत कहती है, यह इसका इलाज नहीं । इसका इलाज कुछ और है, वह हम उस वक्त सोचेंगे जब गांव की पंचायत में न्याय करने की शक्ति न रहेगी ।

सरपंच : पंचायत अवश्य न्याय करेगी, तुम सन्तोष रखो ।

(गांव का चौकीदार आता है)

चौकीदार : (सरपंच से झुक कर पालागन करता है) सरपंच जी! शहर की कुछ औरतें आई हैं । रमा को पूछ रही हैं, उनमें से एक इधर ही आ रही है ।

सरपंच : जाकर उन्हें साथ ले आओ ।

रमा : महिला सम्मेलन की वर्कर्ज होंगी ।

पहला पंच : भई मैं तो चलूं, अब मेरी दाल न गलेगी ।

शमशेर : बैठ जा बेटा जरा सुन ले उनकी बातें । बेभाव की न पड़ी तो कहना ।

दूसरा पंच : मालूम होता है तुम लोगों ने खासा घमासान मचा रखा है ।

(चौकीदार के साथ सोशल वर्कर दाखिल होती है। सब पंच उठकर जयहिंद कहते हैं और फिर बैठ जाते हैं।)

सोशल वर्कर : आज गांव की चौपाल में औरतें, यह अचंभा कैसे हो गया ?

रमा : : गांव का एक नौजवान एक पत्नी के होते हुए दूसरी शादी कर रहा है।

सोशल वर्कर : कहां हैं वह साहबजादे, जरा मैं उनकी शकल तो देखूं।

रमा : वह बहुत दूर जंग पर गए हैं।

सोशल वर्कर : तो यह बहन उसकी पत्नी है ?

रमा : हां इसका नाम नीली है और यह इसकी सास है सुखू और यह इसका लड़का है राजू।

सोशल वर्कर : सास तो अपने लड़के का पक्ष नहीं ले रही होगी ?

रमा : नहीं।

सोशल वर्कर : सच ! (हैरानी से रुक कर) गांव के पंचों की क्या राय है ? वैसे नहीं का तो सवाल ही नहीं उठता। पर यह तटस्थता की पालिसी नहीं चलेगी। यह कमजोरों की पालिसी है। एक तरफ हो जाओ न्याय का साथ दो। विरोधी कैम्प है। उनमें समझौते

की जरूरत नहीं। ये आधे तीतर आधे बटेरों वाली बात गलत है।

रमा : हमने सारा केस इनके सामने रख दिया है, अब यह सोच कर अपना फैसला दे देंगे।

सोशल वर्कर : वैसे इसमें सोचने की कोई खास बात नहीं, हमारा निश्चय है कि एक औरत के होते हुए मर्द दूसरी शादी नहीं कर सकता। हम उसे हर हालत में रोकेंगे चाहे हमें धरना देना पड़े, सत्याग्रह करना पड़े, भूख हड़ताल करनी पड़े।

रमा : (सरपंच से) सरपंच जी, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की समाज सेविकाएं हमारी मेहमान हैं, इनके ठहरने का बन्दोबस्त कर दें।

सरपंच : बहुत अच्छा बेटी।

(सारे पंच उठ जाते हैं और धन्नू हुक्का उठाकर बाहर जाता है। स्टेज पर नीली, सुखू, रमा और राजू रह जाते हैं।)

सोशल वर्कर : (नीली से) अपना घूंघट ऊंचा कर ले नीली, यह घूंघट एक ऐसी गार है जिसके अंधेरे ने स्त्री जाति को सदा भटकाया है। उसने सूरज का मुंह ही नहीं देखा जो उसे प्रकाश की महानता का अनुभव हो। अब तो साड़ी का पल्लू अपनी कमर के गिर्द कसकर बांध

लो और मैदान में उतर आओ। तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया है।

रमा : हमने पिछले तीन-चार महीनों में यहां काफी काम किया है, अब औरतों में जागृति आने लगी है। आज हमने चौपाल को जीता है। यह हमारी बड़ी विजय है।

सोशल वर्कर : आजाद भारत के नए विधान के अनुसार औरतों और मर्दों को बराबर के अधिकार मिल गए हैं, लेकिन अभी यह सब कागजी कार्यवाही है। मर्द इसको मानते नहीं, अपना रोब जमाए जाते हैं। इसलिए कि औरतें अनपढ़ हैं। उनकी मूर्खता का फायदा उठाकर उन्हें अभी कुछ समय और गुलाम रखना चाहते हैं।

रमा : वह तो बल्कि उनके अस्तित्व से ही इन्कार करते हैं। उनका क्या।

सोशल वर्कर : इसकी सिर्फ एक ही सूरत है कि तुम संकल्प कर लो कि अब आगे से गांव की कोई भी औरत अनपढ़ न रहेगी। शिक्षा का उजाला जब अपने पूरे वेग से फैलेगा तो अन्याय का भूत पाताल में मुंह छिपाता फिरेगा। (रमा से) रमा बहन तुम यहां शिक्षा के सेंटर खोलो, प्रौढ़ शिक्षा का खूब काम हो सकेगा। इसके लिए महिला

सम्मेलन जितनी भी सहायता हो सकेगा करेगा। (नीली से) नीली तुम्हारा पति दूसरी शादी न भी करे लेकिन कुछ वह चाहता है जो उसे मिलना चाहिए। तुम एक आदर्श भारतीय नारी बनने की कोशिश करो। तुम अच्छी बनोगी तो एक कुनबा अच्छा होगा। एक कुनबा समाज की एक इकाई है। इकाई सुस्त रहेगी तो समाज अवश्य ही सुस्त रहेगा। (रमा से) रमा तुम आज ही से नीली को पढ़ाने का काम शुरू कर दो। नीली गांव भर के लिए एक महान उदाहरण पेश कर सकती है। तुम नीली को बदल डालो। इसके दृष्टिकोण, इसके विचार, इसकी भावनाएं सब में एक उथल-पुथल जगा दो। इसके घर के कण-कण में उजाला भर दो कि वहां से प्रकाश की किरणें फूटें।—(नीली से) और तुम राजू के जीवन के लिए राहें बनाओ। राजू नए युग का नया मानव बनेगा। नया मानव जिसकी मंजिल सितारों से भी ऊंची है। (राजू को अपने साथ लिपटा कर उसका माथा चूम लेती है।) नया मानव हमारे उज्ज्वल स्वप्नों की रोशनी है।

(पर्दा गिरता है।)

पांचवां दृश्य

(वही पहले वाला घर। नीली भगवान कृष्ण की तस्वीर के आगे बैठी भजन गा रही है। भजन के दौरान में ही सुखू सिर पर पानी का घड़ा उठाए दाखिल होती है और भजन से इतनी प्रभावित होती है कि कोने में खड़ी सुनती रहती है और जब नीली भजन खत्म करके तस्वीर के आगे सिर झुकाती है तो सुखू पानी का घड़ा सिर से उतार कर कोने में रख देती है। नीली जब उठती है तो उसके पल्लू से एक तह किया हुआ कागज गिरता है।)

सुखू : कितना अच्छा था तुम्हारा भजन बेटी, तुम पर भगवान जरूर प्रसन्न होंगे। (कागज को गिरते देखकर) यह कागज कैसा है

नीली ?

नीली : (आंखें झुका कर) एक खत है चाची।

सुखू : किसका ? विजय का ? कब आया।

नीली : नहीं मैंने लिखा है उनको।

सुखू : तुमने लिखा है (हैरानी से) सच ?

नीली : हां सुनाऊं तुम्हें।

सुखू : सुनाओ।

नीली : (खत खोलकर पढ़ती है)

मैं आपको जीवन में पहली बार खत लिख रही हूं। अब तक दूसरों ही से लिखवाती रही, आशा है आप खत देखकर खुश होंगे। यह सब रमा दीदी की कृपा से हुआ। उसने दिन रात पढ़ाकर मुझे इस योग्य बनाया है। रघू भैया को मेरी तरफ से धन्यवाद कह दीजिए। राजू अब बहुत अच्छा लड़का हो गया है। हर रोज स्कूल जाता है और दिल लगा कर पढ़ता है। चाची ने सारे घर को संभाल रखा है और बहुत अधिक ध्यान रखती है। आप कब आ रहे हैं छुट्टी लेकर। रघू भैया तो शायद अगले महीने आएंगे। उन्हीं के साथ क्यों नहीं आ जाते, सफर में साथ रहेगा। और देखो खत लिखने में देरी न किया करो, बड़ी चिन्ता

होती है। राजू की तरफ से जय हिन्द, चाची की तरफ से आशीर्वाद।

आपकी नीली

सुखू : तुमने बहुत अच्छा खत लिखा है, विजय पढ़कर खुश हो जाएगा। एक बार वह आ जाए फिर देखूंगी कैसे दूसरी शादी की बात सोचता है।

(राजू बस्ता लगाए विंग से दाखिल होता है।)

नीली : अरे तू वापस भी आ गया स्कूल से ?

राजू : आज छुट्टी हो गई।

नीली : अच्छा तो यह खत डाल आ लेटर-बक्स में (लिफाफा उसे देती है) और जल्दी आना खेल में न लगा रहना कहीं।

राजू : आज मैं खीर खाऊंगा। मेरे लिए खीर बनाओ।

सुखू : हां हां आज बेटे को जरूर खीर खिलाऊंगी।

राजू : (जाते हुए) और उसमें शक्कर मत डालना, शक्कर से स्वाद.....

नीली : अच्छा खांड़ ही डालूंगी।

(राजू जाता है)

सुखू : परनाम चौधरी की बहू ने लड़का जाया है, उसके घर हो आना जरा।

नीली : तुम ही हो आना, तुम्हारे होते हुए मेरा जाना जरूरी नहीं।

सुखू : जाने से मेल-मिलाप बना रहता है बेटी।

नीली : अच्छा हो आऊंगी (रुककर) तुम्हारा यह घाघरा बहुत पुराना हो गया है। अब की मनीआर्डर आए तो तुम अपना घाघरा बनवा लेना।

सुखू : पर तुम्हारी ओढ़नी भी तो बहुत फट रही है।

नीली : नहीं उससे ज्यादा जरूरी घाघरा है।

सुखू : ओढ़नी लोगी तब मैं घाघरा लूंगी।

नीली : (हंस कर) पर पहले रुपये तो आ लें चाची, हम तो बेकार में ही पागल हो रही हैं।

(राजू आता है)

नीली : (राजू से) डाल आया तू खत को ?

राजू : एक डाल आया हूं एक ले आया हूं, डाकिये ने दिया है।

नीली : लाओ देखूं (खत देखकर) अरे यह तो तुम्हारे पिताजी का है। खत खोलती है और पढ़ती है—

मैं इस महीने की इक्कीस तारीख को गांव पहुंच रहा हूं, मुझे दो महीने की छुट्टी मिल गई है, आशा है तुम सब ठीक होगे।—विजय।

सुखू : आज क्या तारीख है नीली ।

नीली : (सोचकर और उंगलियों पर गिनकर) इक्कीस तो आज ही है चाची ।

सुखू : तो आज आ रहा है मेरा बेटा ।

नीली : (घबरा कर) पर चाची हमने तो कोई तैयारी भी नहीं की । सारा घर गंदा है, कपड़े मैले हैं, यह सब कैसे चलेगा ?

सुखू : तो हो गया है ? विजय अपने ही घर पर आ रहा है । कहीं मेहमान बनने तो नहीं आ रहा !

नीली : नहीं चाची उनके आने तक घर का नक्शा बदल जाना चाहिए नहीं तो वह नाराज होंगे । (राजू से) राजू तू भाग कर रमा दादी को बुला ला, कहना बहुत जरूरी काम है ।

राजू : खीर दोगी ना ।

नीली : (घबराते हुए) हां हां जरूर दूंगी । तू भाग कर जा, देर मत करना आने में ।

(राजू जाता है)

सुखू : तू नहीं समझती चाची, मेरी किस्मत का फैसला होने वाला है आज, या तो मैं रानी बन जाऊंगी या फिर भिखारिन ।

सुखू : पर मेरी समझ में तो नहीं आई तुम्हारी बातें।

नीली : मुझे खुद भी समझ में नहीं आई, आज कुछ होकर रहेगा।

सुखू : क्या होकर रहेगा ?

नीली : क्या वह एक दिन और नहीं रुक सकते ?

सुखू : तू कैसी पागलों वाली बातें कर रही है बहू।

(राजू और रमा दाखिल होते हैं।)

रमा : तू इतनी घबराई हुई क्यों दीख रही है नीली ?

सुखू : आज विजय आ रहा है, उसका खत आया है और यह बेकार में मरी जा रही है।

रमा : विजय भैया आ रहे हैं, यह तो खुशी की बात है नीली।

नीली : खुशी की बात तो है पर जाने क्यों मेरा दिल बैठा जा रहा है।

राजू : (सुखू का आंचल खींचते हुए) चल खीर बना मेरे लिए दादी।

सुखू : तूने परेशान कर रखा है छोरे, चल।

(वह दोनों विंग में चले जाते हैं।)

रमा : (नीली से) क्या बात है ?

नीली : उनके आने से पहले अगर सारे घर का नक्शा न बदला तो मेरी सारी मेहनत बेकार जाएगी। जो कुछ तुमने अब तक किया है वह सब बेकार हो जाएगा।

रमा : पर कैसे हो जाएगा बेकार ?

नीली : अगर उन्हें यह नजर आ गया कि मैं अब वैसी ही जाहिल और फूहड़ हूं जैसी वह मुझे समझते हैं और घर उसी तरह गंदा और बेसलीका है तो वह यहां कभी न रहेंगे। (रुआंसी आवाज से) वह दूसरी शादी कर लेंगे और मैं तबाह हो जाऊंगी।

रमा : तू खाहमखा डर रही है, देख तो पल भर में सारा घर बदल देती हूं। मुझे भी तुम्हारे भैया का खत मिला है कि विजय साहब आ रहे हैं। मैं इधर आने से पहले कुछ चीजें यहां भेजने के लिए कह आई हूं। तुम देखो अभी काया पलट जाती है सारे घर की।

राजू : (अन्दर आकर) रमा दीदी तुम्हारे घर से कुछ चीजें और कुर्सियां आई हैं। तुमने मंगवाई हैं और कुछ फूल भी हैं।

रमा : एक-एक करके ले आओ अन्दर।

(राजू विंग में जाकर तिपाई लाता है और नीली आगे बढ़कर उठा लेती है और उसे अपनी तरफ ले आती है। इसी तरह दो तिपाइयां और चार कुर्सियां आ जाती हैं।)

रमा : इस तिपाई को कमरे के दरमियान रख दो।

(नीली तिपाई उठाकर लाती है।)

और इस पर मेजपोश बिछा दो।

(नीली मेजपोश बिछाती है और रमा और राजू कुर्सियां तिपाई के गिर्द रखते हैं।)

दीदी : फूलों का गुलदस्ता ?

रमा : उसे इस तिपाई पर रख दो।

(राजू विंग से गुलदस्ता उठाकर उस पर रख देता है।)

नीली : और दूसरी तिपाई कहां रखनी है ?

रमा : उसे उस कोने में रख दो।

नीली : तिपाई को कोने में रखकर उस पर मेजपोश बिछा देती है। देखो जो किताबें मैंने तुम्हें पढ़ने को दी थीं वह उस पर जमा दो।

(रमा तिपाई के एंगल ठीक करती है और नीली अन्दर से किताबें लाकर उस पर सजा देती है।)

रमा : अच्छा आ अब तुझे सजा दूं। थोड़ी देर के लिए अन्दर चल (सुखू को पुकारती है) सुखू चाची आकर कमरा देख लें, हम अभी आती हैं।

(सुखू दाखिल होती है और विंग के अन्दर चली जाती है)

सुखू : (हैरानी से) अरे यह क्या कर दिया इन छोरियों ने। कमरा तो पहचाना ही नहीं जाता।

राजू : मेरे बापू का स्वागत हो रहा है।

सुखू : हां।

राजू : जब विजय के बापू लाम पर थे तो तुमने उनका भी ऐसे ही स्वागत किया था।

सुखू : (डांट कर) चुप रे छोकरे, तू बहुत बातें करने लगा है।

राजू : बापू मेरे लिए क्या लाएंगे दादी ?

सुखू : खिलौने।

राजू : फिर हम दोनों खेलेंगे, खेलोगी न मेरे साथ ! (उसके साथ लिपट जाता है।)

सुखू : खेलूंगी बाबा, खेलूंगी !

(रमा और नीली दाखिल होती हैं। नीली ने बहुत अच्छी साड़ी पहन रखी है। माथे पर बिन्दी लगा रखी है और बालों में फूल आंके हुए है। उसकी आंखें झुकी हुई हैं।)

रमा : चाची पहचाना अपनी बहू को ?

सुखू : (हैरान होकर) नीली मैं सदके जाऊं अपनी बेटी के। हाय मनीआर्डर नहीं आया नहीं तो सारे रुपये वार देती इस पर से।

(रमा हंसती है, नीली भी हंसती है। कुंडी

खटखटाने की आवाज । सुखू विंग की तरफ जाती है । विजय दाखिल होता है । रमा और नीली स्टेज के एक कोने में खड़ी हो जाती हैं और आपस में इशारे करती हैं । विजय हैरानी से कमरे को घूरे जा रहा है ।

सुखू : आगे बढ़ो बेटा, बैठो ।

विजय : मां तुमने अपना घर बेच दिया क्या ?

सुखू : क्यों बेटा ?

विजय : यह तो अपना घर नहीं दीखता ।

सुखू : अपना ही है बेटा, सिर्फ जरा बदल गया है । चीजें बदल जाती हैं तो क्या अपनी नहीं रहतीं ।

विजय : अपनी तो रहती है लेकिन..... (अपना माथा हाथ से दबाता है ।)

सुखू : नीली कहां है ?

रमा : यहीं है ।

(इसी समय रमा 'नमस्ते विजय भैया' कह कर विंग में चली जाती है ।)

विजय : यह लड़की कौन थी ?

सुखू : रघू की बहू ।

विजय : (हैरानी से) हैं, मैं तो पहचान ही नहीं सका । (नीली की तरफ देखकर) वह कौन है ?

सुखू : ठहरो मैं नीली को बुलाऊं।

(सुखू चली जाती है। नीली धीरे-धीरे विजय की तरफ बढ़ती है और उसके कदमों में झुक जाती है और कदमों की धूल अपने माथे पर लगाती है। विजय हैरानी से देखता रहता है।)

विजय : कौन नीली ?

नीली : (आंखें झुकाए हुए) जी !

विजय : कितनी बदल गई हो तुम, पहचानी भी नहीं जातीं।

नीली : पर आप तो नहीं बदले, मैंने आपको पहचान लिया।

विजय : नहीं मैं भी बदल गया हूं। पहले वाला विजय नहीं रहा। बाज तरफ इन्सान के बदलने में एक क्षण की जरूरत होती है। लगता है जैसे वह क्षण आ रहा है, आ गया है, आकर गुजर गया है। (जजबाती अंदाज में)

नीली : आप बैठिए न कुर्सी पर, रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं हुई आपको।

विजय : नहीं बिलकुल नहीं।

नीली : आपका खत सुबह ही मिला था, तब से आंखें दरवाजे पर लगाए बैठी हूं।

विजय : मेरा ख्याल था खत लेट पहुंचेगा।

नीली : आज आप अचानक आकर हैरान कर देंगे। (हंसती है)

विजय : हां यही सोचा था।

नीली : ठहरिए मैं आपके लिए पानी लाऊं, प्यास लग रही होगी। (नीली जाती है, विजय इसके जाने के बाद अपनी कुर्सी से उठता है और कमरे का जायजा लेने लगता है। मेजपोश के कोने देखता है। फिर तिपाई पर रखी किताबों को उठाकर देखने लगता है। इतने में गांव का आदमी राधे दाखिल होता है।)

राधे : विजय भैया चौधरी हरि सिंह हमारे घर में आपका इन्तजार कर रहे हैं। उन्होंने आपको बुलाया है।

विजय : (हर तरफ से अपना ध्यान हटाकर) अरे तुम राधे! कहो कैसे हो? आओ भाई बैठो।

(नीली ट्रे में पानी का गिलास रखे और उसे ऊपर से ढांके हुए दाखिल होती है और फिर गिलास को बड़े सलीके से पेश करती है।)

विजय : शुक्रिया।

नीली : (राधे से) आपके लिए पानी लाऊं भाई साहब ?

राधे : (घबरा कर) नहीं मैं चलता हूं। (विंग के करीब रुककर) विजय भैया ! क्या कहूं चौधरी साहब से ?

विजय : कहना मैं थोड़ी देर में आता हूं।

नीली : कोई जरूरी काम है क्या।

विजय : था तो जरूरी काम पर अब कुछ देर के लिए छोड़ा भी जा सकता है। इस स्वर्ग से निकलने को जी नहीं चाहता (रुक कर) राजू कहां है, नजर नहीं आया।

नीली : (पुकारती है) राजू बेटा आओ।

राजू : (दूर से) आया मां !

(राजू बड़ी स्मार्ट ड्रेस में दाखिल होता है।)

नीली : जयहिन्द कहो पिताजी को।

राजू : (फौजी अंदाज से) जयहिन्द !

विजय : जय हिन्द !

(आगे बढ़कर उसे उठा लेता है और चूम लेता है।) मालूम होता है नीली तुमने तो दुनिया भर में इन्कलाब कर दिया है।

(कुंडी खटखटाने की आवाज। नीली विंग के अन्दर जाती है और रमा दाखिल होती

है। इसी दौरान विजय राजू के बाल सहलाता रहता है।)

रमा : विजय भैया अब आप को चौधरी हरि सिंह से मिलने की जरूरत नहीं। महिला सम्मेलन की वर्कर्ज ने उनसे बातचीत कर ली है। उनकी तसल्ली हो गई है कि हमेशा याद रखेंगे। अब आप बेशक वहां न जाएं।

नीली : कौन से चौधरी हरि सिंह ?

रमा : विजय भैया के होने वाले ससुर।

विजय : तुमने अच्छा किया जो उन्हें वापस कर दिया। मुझे बड़ी परेशानी से बचा लिया बहन।

नीली : मुझे जरा अफसोस रहेगा।

विजय : क्यों ?

नीली : आपको सदमा पहुंचा होगा। आप दूसरी शादी कर क्यों नहीं लेते। राजू को दो माताएं मिल जाएंगी और आपको दो बीवियां।

रमा : हां भाई साहब बात तो ठीक है, एक यहां रहे दूसरी लाम पर साथ जाए।

विजय : नहीं भाई बाज आया मैं तो, अब न मुझे दो बीवियां चाहिए न राजू को दो मां। एक बीवी और एक मां में ही इन्सान की मुक्ति है।

(इतने में सुखू दाखिल होती है। उसने नया लहंगा पहन रखा है और हाथ में खीर का कटोरा है)

सुखू : ले बेटा तू भी मुंह मीठा कर ले। राजू खीर खाने को कह रहा था।

राजू : इसमें शक्कर नहीं, आज तो बढ़िया सफेद खांड़ डाली है।

(सुखू एक चमचा भर के राजू के मुंह में डालती है और एक चमचा विजय के मुंह में। दोनों हंसते हैं।)

रमा : बच्चों का बड़ा ख्याल है दुल्हिन को, आज तो तू भी बास बरस की लग रही है चाची।

सुखू : चुप बेहया, पढ़-लिख कर गुरत कर रही है।

(सब हंसने लगते हैं। पहला पर्दा धीरे-धीरे गिरता है और विजय और राजू खीर चमचे से खाए जाते हैं।)

□□□

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
शफीक मेमोरियल
17-बी, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट
नयी दिल्ली-110 002